SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 04

- Unit – II : Topic

  A. भारतीय रंगमंच : उद्भव एवं विकास.

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

भारतीय रंगमंच : उद्भव एवं विकास

संस्कृत नाटक की अवनति

मुरारि तथा राजशेखर के रूपकों में वास्तविक नाट्य गुणों के ह्रास होने की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ए.बी. कीथ ने नाटक की अवनति के लिए कई कारकों को जिम्मेदार माना है। रूपक के यथार्थ स्वरूप आ असाधारण रूप से नगण्य ज्ञान इसका मुख्य कारण था। दूसरा प्रमुख कारण भारत में इस्लाम का आगमन था। प्रांरभ में इसका तात्कालिक प्रभाव नहीं पड़ा परन्तु मुस्लिम शक्ति के प्रसार से वातावरण नाटकों की रचना और अभिनय के अनुकूल नहीं रहा। एक अन्य कारण में कीथ महोदय का यह कहना है कि नाटक की भाषाओं और यथार्थ की भाषाओं का अंतर बढ़ता जा रहा है। स्पष्ट है कि 400 ई. की अपेक्षा 1000 ई. में संस्कृत और प्राकृत में रचना बिलकुल भिन्न वस्तु थी, जबकि जनपदीय भाषाएं साहित्यिक रूप प्राप्त करने लगी थीं। परन्तु संस्कृत नाटक का प्राबल्य इतना शक्तिशाली है कि उन्नीसवीं शताब्दी में पहुँचकर ही नव जनपदीय भाषा का नाटक हिंदी में प्रकट हुआ।

संस्कृत नाटक का उदय उच्चतर ब्राह्मण वर्ग और क्षत्रिय शासक वर्ग के संरक्षण में हुआ। प्राचीन भारत के अनेक अवसरों जैसे विवाह, यात्रा, अभिषेक नगर या गृह प्रवेश, पुत्र जन्म तथा विशेष उत्सवों पर नाटक आयोजित किए जाने की परंपरा थी। अभिजात वर्ग के नाटक राजमहलों तथा मंदिर प्रांगण में होते थे जबकि जनसाधारण के खुले प्रांगण में। धर्म तथा इतिहासकाल में उपलब्ध संकेतों से नाटकों का निर्माण किया गया। इतिहास काव्य पर अतिशय निर्भरता के कारण भी

नाटक की क्षति हुई, कवि यह समझने में असमर्थ रहे कि इतिहास काव्य के अधिकतर विषय कुल मिलाकर अनाटकीय थे। ब्राह्मण आदर्शों के कारण भी इसे नुकसान उठाना पड़ा क्योंकि ब्राह्मण आदर्श में व्यक्तित्व का कोई महत्व नहीं है। इस कारण संस्कृत नाटक केवल प्रकारात्मक पात्रों की ओर ही ध्यान देता रहा, व्यक्ति वैचित्र्य की ओर नहीं। नाटककारों तथा उनके नाटकों का अध्ययन नाटकों के उत्थान, विकास एवं ह्रास को समझने के लिए आवश्यक है। नाट्य साहित्यों के योगदान में इस कला को न केवल शास्त्रीय रूप प्रदान किया बल्कि इसको उच्चतर स्थिति में पहुँचाया। इसी कारण प्रमुख नाटककारों का अध्ययन किया गया है।

संदर्भ– सूची

1. देव, तिवारी एवं खन्ना, भारतीय साहित्य एवं परिचय (दिल्ली विश्वविद्यालय के लिए संपादक), पियर्सन, दिल्ली, 2005

2. आनंद लाल (सं.), ऑक्सफोर्ड थियेटर ऑफ इंडिया, ए कॉनसाइज कॉमपैनियन, ओ.यू.पी., दिल्ली, 2009